नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव पास बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तकों एवं परिवर्तित पाठ्यक्रम पर आधारित है।

पास बुक्स में नं. 1

संजीव®

पास बुक्स

हिन्दी साहित्य-XI

(कक्षा 11 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा बोर्ड की website पर जून, 2023 में जारी पूर्णतः नवीन परिवर्तित पाठ्यक्रमानुसार

- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 320/-

- प्रकाशक :

  संजीव प्रकाशन

  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

  जयपुर-3

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- लेजर कम्पोजिंग :

  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- मुद्रक :

  आधुनिक बुक बाईन्डर, जयपुर

  ****

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं–

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा बोर्ड की website पर जून, 2023 में जारी नवीन परिवर्तित पाठ्यक्रम

हिन्दी साहित्य– कक्षा-11

समय : 3.15 घण्टे **पूर्णांक : 100**

अधिगम क्षेत्र	कुल अंक
अपठित (गद्यांश व पद्यांश)	15
रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन (अभिव्यक्ति और माध्यम)	22
व्यावहारिक व्याकरण	10
पाठ्यपुस्तक : **अंतरा** (भाग-1)	40
पूरक-पुस्तक : **अंतराल** (भाग-1)	13

1. अपठित : (गद्यांश और पद्यांश) **कुल अंक : 15**

(i) अपठित गद्यांश (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 08

(ii) अपठित पद्यांश (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 07

2. रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन : **कुल अंक : 22**

(अभिव्यक्ति और माध्यम के आधार पर प्रश्न)

(i) जनसंचार माध्यम और लेखन (दो लघूत्तरात्मक प्रश्न) 04

(ii) निबन्ध (किसी विषय पर विकल्प सहित) 05

(iii) कार्यालयी पत्र/रोजगार सम्बन्धी आवेदन पत्र (विकल्प सहित) 05

(iv) व्यावहारिक लेखन (प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्ति, परिपत्र, कार्य-सूची अथवा कार्यवृत्त से सम्बन्धित पर दो प्रश्न) 08

3. व्यावहारिक व्याकरण **कुल अंक : 10**

(दो बहुचयनात्मक, छः रिक्त स्थान पूर्ति, एक लघूत्तरात्मक प्रश्न)

(i) रस प्रकरण 02

(ii) छंद (दोहा, सोरठा, चौपाई, रोला, मन्दाक्रांता, शिखरिणी, वसंततिलका, मालिनी) 04

(iii) अलंकार (अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, संदेह, भ्रांतिमान) 04

4. अंतरा भाग–1 **कुल अंक : 40**

(i) काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या 05

(ii) गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या 05

(iii) किसी एक लेखक/कवि का साहित्यिक परिचय (विकल्प सहित) 02

(iv) गद्य भाग प्रश्नोत्तर (चार बहुचयनात्मक, दो लघूत्तरात्मक, एक दीर्घउत्तरात्मक, एक निबन्धात्मक प्रश्न) 15

(v) पद्य भाग प्रश्नोत्तर (चार बहुचयनात्मक, एक लघूत्तरात्मक, एक दीर्घउत्तरात्मक, एक निबन्धात्मक प्रश्न) 13

5. अंतराल भाग–1 **13**

पाठों की विषय-वस्तु पर आधारित

(चार बहुचयनात्मक, एक लघूत्तरात्मक, एक दीर्घउत्तरात्मक, एक निबन्धात्मक प्रश्न) 13

निर्धारित पुस्तकें :

1. **अंतरा–भाग 1**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
2. **अंतराल–भाग 1**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
3. **अभिव्यक्ति और माध्यम**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

अन्तरा भाग 1

गद्य-खण्ड

1. ईदगाह (प्रेमचन्द) 1–17
2. दोपहर का भोजन (अमरकान्त) 17–30
3. टार्च बेचनेवाले (हरिशंकर परसाई) 30 42
4. गूँगे (रांगेय राघव) 42–57
5. ज्योतिबा फुले (सुधा अरोड़ा) 57–70
6. खानाबदोश (ओमप्रकाश वाल्मीकि) 70–86
7. उसकी माँ (पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र') 86–98
8. भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है? (भारतेन्दु हरिश्चंद्र) 99–112

काव्य-खण्ड

1. कबीर 113–120
2. सूरदास 120–127
3. देव 128–137
4. सुमित्रानन्दन पन्त 137–153
5. महादेवी वर्मा 153–161
6. नागार्जुन 161–172
7. श्रीकान्त वर्मा 172–180
8. धूमिल 181–188

अन्तराल भाग 1

1. हुसैन की कहानी अपनी जबानी (मकबूल फिदा हुसैन) 189–197
2. आवारा मसीहा (विष्णु प्रभाकर) 197–209

अपठित

1. अपठित गद्यांश 210–225

2. अपठित पद्यांश 225–240

रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन

(1) जनसंचार माध्यम और लेखन **241–255**

(2) निबन्ध–लेखन **256–294**

1. साइबर अपराध के बढ़ते कदम
   अथवा
   सूचना प्रौद्योगिकी में बढ़ते अपराध 258
2. कृत्रिम बुद्धिमता (AI) वरदान या अभिशाप
   अथवा
   कृत्रिम बुद्धिमता
   अथवा
   कृत्रिम बुद्धिमता मानवता के लिए घातक है 258
3. वैश्विक महामारी के दौर में ऑनलाइन शिक्षण 259
4. राजस्थान की सतरंगी संस्कृति 260
5. महिला सशक्तिकरण
   अथवा
   स्त्री सशक्तिकरण 261
6. पेट्रोल एवं डीजल की बढ़ती कीमतें 262
7. कोरोना वायरस—21वीं सदी की महामारी
   अथवा
   कोरोना महामारी–एक अभिशाप
   अथवा
   कोरोना वायरस महामारी के सामाजिक–आर्थिक प्रभाव 262
8. मेक इन इण्डिया अथवा स्वदेशी उद्योग 263
9. आत्मनिर्भर भारत 264
10. कैशलेस अर्थव्यवस्था : चुनौतीपूर्ण सकारात्मक कदम 264
11. भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग
    अथवा
    योग की उपादेयता
    अथवा
    योग : स्वास्थ्य की कुंजी

अथवा
योग भगाएँ रोग 265
12. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ 266
13. शिक्षा का अधिकार
अथवा
अनिवार्य बाल-शिक्षा का अधिकार 267
14. रोजगार गारन्टी योजना : मनरेगा
अथवा
मनरेगा : गाँवों में रोजगार योजना
अथवा
गाँवों के विकास की योजना : मनरेगा 267
15. आतंकवाद : वैश्विक क्षितिज पर
अथवा
आतंकवाद : एक वैश्विक समस्या 268
16. खाद्य पदार्थों में मिलावट और भारतीय समाज
अथवा
मिलावटी माल का बढ़ता कारोबार 269
17. मेरा प्रिय कवि
अथवा
मेरा प्रिय साहित्यकार : गोस्वामी तुलसीदास 270
18. सर्व शिक्षा अभियान
अथवा
शिक्षा का प्रसार : उन्नति का द्वार
अथवा
साक्षरता अभियान के बढ़ते कदम 270
19. इन्टरनेट-सूचना क्रान्ति
अथवा
इन्टरनेट : सूचना एवं ज्ञान का भण्डार
अथवा
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के लिए इंटरनेट की आवश्यकता 271
20. राजस्थान के पर्यटन स्थल
अथवा
राजस्थान में पर्यटन की संभावनाएँ
अथवा
राजस्थान और पर्यटन की सम्भावनाएँ 272
21. राजस्थान के प्रसिद्ध मेले

अथवा
राजस्थान के प्रमुख पर्वोत्सव 273
22. घटती सामाजिकता : बढ़ते संचार साधन
अथवा
संचार क्रांति और समाज 273
23. समाज-निर्माण में नारी की भूमिका
अथवा
समाज में नारी के बढ़ते कदम
अथवा
समाज में नारी का योगदान 274
24. राष्ट्र के प्रति हमारा नैतिक दायित्व
अथवा
राष्ट्र के प्रति हमारा दायित्व 275
25. वर्तमान शिक्षा और सदाचार
अथवा
वर्तमान शिक्षा-प्रणाली : गुण और दोष 275
26. युवा छात्रों में बढ़ता असंतोष 276
27. नये भारत की आशा-युवावर्ग
अथवा
राष्ट्र-निर्माण में युवा पीढ़ी की भूमिका
अथवा
विद्यार्थियों का राष्ट्र-निर्माण में योगदान
अथवा
युवा शक्ति एवं चुनौतियाँ 277
28. विद्यार्थी-जीवन एवं अनुशासन
अथवा
अनुशासन का महत्त्व 278
29. बेरोजगारी की समस्या
अथवा
बेरोजगारी की समस्या : कारण और निराकरण के उपाय 279
30. महँगाई : समस्या और समाधान
अथवा
बढ़ती महँगाई : घटता जीवन स्तर
अथवा
मूल्यवृद्धि की समस्या
अथवा
बढ़ती महँगाई का जीवन पर प्रभाव 279

31. भ्रष्टाचार का महादानव
अथवा
भ्रष्टाचार : कारण व निवारण 280
32. राजस्थान के लोकगीत 281
33. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप 282
34. जल-संरक्षण : हमारा दायित्व
अथवा
जल है तो जीवन है 282
35. पर्यावरण संरक्षण परमावश्यक
अथवा
पर्यावरण संरक्षण और युवा 283
36. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता
अथवा
नैतिक शिक्षा का महत्त्व 284
37. प्लास्टिक थैली : पर्यावरण की दुश्मन
अथवा
प्लास्टिक कैरी बैग्स : असाध्य रोगवर्धक 285
38. बढ़ते वाहन : घटता जीवन-धन
अथवा
वाहन-वृद्धि से स्वास्थ्य-हानि 285
39. मानवता के लिए चुनौती-कन्या-भ्रूण-हत्या
अथवा
कन्या-भ्रूण हत्या : लिंगभेद का अपराध 286
40. आधुनिक सूचना - प्रौद्योगिकी
अथवा
सूचना-क्रांति के युग में भारत 287
41. कम्प्यूटर : अभिशाप या वरदान
अथवा
कम्प्यूटर के चमत्कार 287
42. विद्यार्थी और वर्तमान राजनीति 288
43. इक्कीसवीं सदी की कल्पनाएँ व सम्भावनाएँ
अथवा
मेरे सपनों का भारत 289
44. समाचार-पत्र
अथवा
समाचार-पत्रों का महत्त्व 290
45. दहेज-दानव

अथवा

समाज का अभिशाप : दहेज प्रथा 290

46. बाल-विवाह : सामाजिक अभिशाप 291

47. कम्प्यूटर शिक्षा-आधुनिक समय की आवश्यकता

अथवा

कम्प्यूटर शिक्षा की उपयोगिता 292

48. नदी जल स्वच्छता अभियान 292

49. राजस्थान में बढ़ता जल-संकट 293

50. कटते जंगल : घटता मंगल 294

(3) कार्यालयी पत्र/रोजगार संबंधी आवेदन-पत्र 295-318

(4) व्यावहारिक लेखन 319-351

[1. प्रतिवेदन (रिपोर्ट) 2. प्रेस-विज्ञप्ति 3. परिपत्र 4. कार्यसूची 5. कार्यवृत्त]

व्यावहारिक व्याकरण 352-380

(i) रस प्रकरण 352-362

(ii) छन्द 363-370

(iii) अलंकार 371-380

हिन्दी साहित्य–कक्षा-11

अन्तरा भाग-1

गद्य-खण्ड

1. ईदगाह

(प्रेमचन्द)

लेखक-परिचय

प्रेमचन्दजी का जन्म वाराणसी जनपद (उत्तर प्रदेश) के लमही ग्राम में सन् 1880 ई. में हुआ था। इनका मूल नाम धनपतराय था। चाचा प्यार से नवाब कहते थे। प्रेमचन्द की प्रारम्भिक शिक्षा बनारस में हुई। मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर ये अध्यापन कार्य करने लगे। फिर स्वाध्याय के रूप में ही बी.ए. तक शिक्षा ग्रहण की। ये अध्यापन से डिप्टी इन्स्पेक्टर बने। गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन के दौरान प्रेमचन्द ने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और जीविका के लिए लेखन-कार्य को अपनाया। प्रारम्भ में ये नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखने लगे, परन्तु अंग्रेज सरकार द्वारा जब इनकी रचना 'सोजे वतन' जब्त की गई, तब ये हिन्दी में प्रेमचन्द नाम से लिखने लगे।

प्रेमचन्द ने कहानी, उपन्यास, निबन्ध, नाटक आदि अनेक विधाओं पर लेखनी चलायी। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—मानसरोवर-आठ भाग, गुप्तधन—दो भाग (कहानी संग्रह); उपन्यास—निर्मला, सेवा सदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, गबन, गोदान; नाटक—कर्बला, संग्राम, प्रेम की वेदी; निबन्ध संग्रह—विविध प्रसंग (तीन खण्डों में) तथा कुछ विचार। इन्होंने माधुरी, हंस, मर्यादा तथा जागरण नामक पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में किसानों, दलितों, नारियों की वेदना और वर्ण-व्यवस्था की कुरीतियों का मार्मिक एवं सर्वश्रेष्ठ चित्रण किया है। इनका निधन सन् 1936 में हुआ।

पाठ का सारांश

ईद की हलचल–प्रस्तुत कहानी के आरम्भ में रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद आई ईद से गाँव भर में हुई हलचल का चित्रण किया गया है। बड़े-बूढ़े तो ईद मनाने ईदगाह जाने के लिए तैयारी करते ही हैं साथ ही साथ बच्चे ईद के अवसर पर बहुत खुश होते हैं क्योंकि उन्हें खर्च करने के लिए ईदी मिलती है।

हामिद की स्थिति का चित्रण–गाँव का एक बालक हामिद अनाथ था। वह अपनी बूढ़ी दादी अमीना के साथ रहता था। अमीना उसे यह कहकर बहलाती थी कि तेरे अब्बाजान रुपये कमाने गए हैं और अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से अच्छी-अच्छी चीजें लाने गई हैं। हामिद यह कल्पना करके प्रसन्न होता था कि अब्बाजान के रुपयों से भरी थैलियाँ और अम्मीजान के तोहफे/उपहार लेकर आने पर वह दिल के अरमान निकाल लेगा।

अमीना का दु:ख–हामिद की बूढ़ी गरीब दादी अमीना ईद आने पर अपनी कोठरी में रोती थी। उसके बेटे आबिद को मरे तो बहुत दिन हो गये थे, किन्तु ईद के दिन अपनी अभावग्रस्त स्थिति के कारण उसे आबिद के बारे में सोचकर विशेष दु:ख होता था। वह सोचती थी कि आबिद होता तो क्या ईद इसी तरह आती और चली जाती। अमीना के घर ईद मनाने के लिए कुछ नहीं था यहाँ तक कि उसके पास तो अन्न का दाना भी न था।

अमीना की चिन्ता–गाँव के और बच्चे अपने बाप के साथ ईदगाह जा रहे थे किन्तु अमीना हामिद के अकेले जाने के कारण चिन्तित थी। उसे डर था कि बालक मेले की भीड़-भाड़ में कहीं खो न जाए। छोटा-सा हामिद तीन

कोस पैदल जाएगा तो उसके पैरों में छाले पड़ जाएँगे। उसके पास जूते भी नहीं हैं। यह सोचकर अमीना दु:खी और चिन्तित थी।

बाल-सुलभ क्रियाएँ—हामिद और उसके साथी रास्ते में चले जा रहे थे। कभी वे दौड़ते और कभी पीछे रह गये साथियों का इन्तजार करते। सड़क के दोनों ओर पक्की चारदीवारी से घिरे हुए अमीरों के बगीचों में फलदार पेड़ थे, उन्हें देखकर कोई बालक कंकड़ी उठाकर निशाना लगा देता और बच्चे माली को गाली देते देखकर कुछ दूर जाकर खूब हँसते। शहर की अदालत, कॉलेज, क्लब-घर आदि की बड़ी इमारतें देखकर वे उसके सम्बन्ध में कई तरह की कल्पनाएँ करते थे। वे सोचते कि क्लब-घर में मुर्दे की खोपड़ियाँ दौड़ती हैं। क्लब-घर में मेमों के खेलने की सुनी हुई बातों पर उन्हें आश्चर्य होता। हलवाइयों की दुकानों और रात को पहरा देने वाले कान्स्टेबिलों के बारे में सुनी हुई बातों की वे चर्चा करते। कोई कहता कि रात को जिन्नात सारी मिठाई खरीद ले जाते हैं और कान्स्टेबिल चोरों से मिले रहते हैं।

रोजेदारों की सामूहिक क्रियाएँ—बच्चे गाँव वालों के साथ ईदगाह के पास पहुँचे। वे इक्के-ताँगों, मोटरों पर सवार लोगों, उनके भड़कीले वस्त्रों को देखते ही रह जाते। उन्हें अपनी विपन्नता का ध्यान भी न था। लेखक ने पंक्तिबद्ध रोजेदारों की सामूहिक क्रियाओं और ईदगाह की सुन्दर व्यवस्था का चित्रण किया है।

बच्चों का स्पर्द्धा-भाव—बच्चे एक-दूसरे से पीछे नहीं रहना चाहते। वे खिलौने खरीदते हैं और अपने-अपने खिलौनों को श्रेष्ठ मानते हैं। हामिद के साथी मिट्टी के सिपाही, भिश्ती, वकील आदि खरीदते हैं। वे खाने की चीजें खरीदते और खाते हैं, किन्तु हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, वह महँगी चीजें कैसे खरीदे? साथ के बच्चे हामिद की गरीबी का मजाक भी उड़ाते हैं। अन्त में हामिद अपनी दादी का ध्यान रखकर चिमटा खरीदता है और यह सिद्ध करने में सफल हो जाता है कि खिलौनों से चिमटा ही अच्छा है। वह कई खिलौने के बराबर है। सब बच्चे अपने खिलौने हामिद के हाथ में दे देते हैं तब उसके चिमटे को लेकर देखते हैं। बच्चे घर में खिलौने दिखाकर गौरव का अनुभव करते हैं। वे उन्हें अच्छी तरह रखने में अधिक मशगूल होने से सावधानी नहीं रख पाते। फलत: खिलौने गिरकर टूट भी जाते हैं। वे खिलौनों को ठीक करने के लिए अपनी बुद्धि का पूरा उपयोग भी करते हैं।

अमीना द्वारा दुआएँ देना—हामिद के हाथ में चिमटा देखकर अमीना को दु:ख हुआ कि उसे सारे मेले में और कोई चीज ही न मिली। हामिद द्वारा सफाई देने पर अमीना का क्रोध स्नेह में बदल गया। हामिद के सद्भाव को देखकर वह गद्गद हो गई। अंतत: वह रोती जाती और हामिद को दुआएँ देती जाती थी। हामिद अपनी दादी के ऐसे व्यवहार का रहस्य नहीं जान सका।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. 'ईदगाह' कहानी के उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जिनसे ईद के अवसर पर ग्रामीण परिवेश का उल्लास प्रकट होता है।

उत्तर—कोई भी त्योहार हो, उससे मनुष्य उल्लास का अनुभव करता है। ईद का त्यौहार तो पूरे तीस दिन तक रोजे रखने के बाद मनाया जाता है, इस कारण उससे स्वाभाविक रूप से ही उल्लास का अनुभव होता है। त्योहारों पर बड़े-बूढ़े तो सामान जुटाने, तैयारी करने में व्यस्त हो जाते हैं तथा बच्चे त्योहार का पूरा आनन्द प्राप्त करते हैं। कहानीकार ने ईद के अवसर पर ग्रामीणों में ही नहीं, प्रकृति में भी उल्लास दिखाया है। उस दिन बड़ा ही मनोहर, सुहावना प्रभात था। वृक्षों पर सुहावनी हरियाली थी, खेतों में कुछ रौनक थी, आसमान पर कुछ सुनहरी लालिमा थी। सूर्य भी प्यारा, शीतल लग रहा था मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा हो। गाँव भर में हलचल थी, ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही थीं। किसी के कुरते में बटन नहीं थे तो वह पड़ोस के घर से सुई-धागा लेने जा रहा था। किसी के जूते कड़े हो गये थे तो वह तेल डलवाने तेली के पास भागा जा रहा था। बच्चे भी ईदगाह जाने और वहाँ मेला देखने को लेकर प्रसन्न हो रहे थे। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में ईद के अवसर पर उत्पन्न ग्रामीण परिवेश का उल्लास व्यक्त करने वाले कई प्रसंग वर्णित हैं।

प्रश्न 2. 'उसके अन्दर प्रकाश है, बाहर आशा। विपत्ति अपना सारा दलबल लेकर आए, हामिद की आनन्दभरी चितवन उसका विध्वंस कर देगी।'—इस कथन से लेखक का क्या आशय है?